एज्रा

कुस्रू बन्दियों को वापसी में सहायता करता है

1 कुस्रू के फारस पर राज्य करने के प्रथम वर्ष* यहोवा ने कुस्रू को
एक घोषणा करने के लिये प्रोत्साहित किया। कुस्रू ने उस घोषणा
को लिखवाया और अपने राज्य में हर एक स्थान पर पढ़वाया। यह
इसलिये हुआ ताकि यहोवा का वह सन्देश जो यिर्मयाह† द्वारा कहा
गया था, सच्चा हो सके। घोषणा यह है:

2 फारस के राजा कुस्रू का सन्देश:
स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा, ने पृथ्वी के सारे राज्य मुझको दिये
है और यहोवा ने मुझे यहूदा देश के यरूशलेम में उसका एक
मन्दिर बनाने के लिए चुना। 3 यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर है,
वह परमेश्वर जो यरूशलेम में है। यदि परमेश्वर के व्यक्तियों में
कोई भी व्यक्ति तुम्हारे बीच रह रहा है तो मैं यह प्रार्थना करता हूँ
कि परमेश्वर उसे आशीर्वाद दे। तुम्हें उसे यहूदा देश के यरूशलेम
में जाने देना चाहिये। तुम्हें यहोवा के मन्दिर को बनाने के लिये
उन्हें जाने देना चाहिये। 4 और इसलिये किसी भी उस स्थान में
जहाँ इस्राएल के लोग बचे हो उस स्थान के लोगों को उन बचे
हुओं की सहायता करनी चाहिये। उन लोगों को चाँदी, सोना,
गाय और अन्य चीजे दो। यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर के
लिये उन्हें भेंट दो।

5 अत: यहूदा और बिन्यामीन के परिवार समूहों के प्रमुखों ने
यरूशलेम जाने की तैयारी की। वे यहोवा के मन्दिर को बनाने के

* **1:1:** प्रथम वर्ष अर्थात् ई. पू. 538 † **1:1:** यहोवा का … यिर्मयाह देखें यिर्म. 25:12-14

लिये यरूशलेम जा रहे थे। परमेश्वर ने जिन लोगों को प्रोत्साहित
किया था वे भी यरूशलेम जाने को तैयार हो गए। 6 उनके सभी
पड़ोसियों ने उन्हें बहुत सी भेंट दी। उन्होंने उन्हें चाँदी, सोना, पशु
और अन्य कीमती चीज़ें दी। उनके पड़ोसियों ने उन्हें वे सभी चीज़ें
स्वेच्छापूर्वक दीं। 7 राजा कुस्रू भी उन चीज़ों को लाया जो यहोवा के
मन्दिर की थी। नबूकदनेस्सर उन चीज़ों को यरूशलेम से लूट लाया
था। नबूकदनेस्सर ने उन चीज़ों को अपने उस मन्दिर में रखा, जिसमें
वह अपने असत्य देवताओं को रखता था। 8 फारस के राजा कुस्रू
ने अपने उस व्यक्ति से जो उसके धन की देख—रेख करता था, इन
चीज़ों को बाहर लाने के लिये कहा। उस व्यक्ति का नाम मिथ्रदात
था। अत: मिथ्रदात उन चीज़ों को यहूदा के प्रमुख शेशबस्सर के
पास लेकर आया।

9 जिन चीज़ों को मिथ्रदात यहोवा के मन्दिर से लाया था वे ये
थीं: सोने के पात्र 30, चाँदी के पात्र 1,000, चाकू और कड़ाहियाँ
29, 10 सोने के कटोरे 30, सोने के कटोरों जैसे चाँदी के कटोरे, 410,
तथा एक हजार अन्य प्रकार के पात्र 1,000.

11 सब मिलाकर वहाँ सोने चाँदी की बनी पाँच हजार चार सौ
चीज़ें थीं। शेशबस्सर इन सभी चीज़ों को अपने साथ उस समय
लाया जब बन्दियों ने बाबेल छोड़ा और यरूशलेम को वापस लौट
गये।

2

छुटकर वापस आने वाले बन्दियों की सूची

1 ये राज्य के वे व्यक्ति हैं जो बन्धुवाई से लौट कर आये। बीते
समय में बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर उन लोगों को बन्दी के रूप
में बाबेल लाया था। ये लोग यरूशलेम और यहूदा को वापस आए।
हर एक व्यक्ति यहूदा में अपने—अपने नगर को वापस गया। 2 ये
वे लोग हैं जो जरूब्बाबेल के साथ वापस आए: येशू, नहेम्याह,
सहायाह, रेलायाह, मौर्दकै, बिलशान, मिस्पार, बिगवै, रहूम और

बाना। यह इस्राएल के उन लोगों के नाम और उनकी संख्या है
जो वापस लौटे:

3 परोश के वंशज#2,172
4 शपत्याह के वंशज#372
5 आरह के वंशज#775
6 येशू और योआब के परिवार के पहत्मोआब के वंशज#2,812
7 एलाम के वंशज#1,254
8 जत्तू के वंशज#945
9 जक्कै के वंशज#760
10 बानी के वंशज#642
11 बेबै के वंशज#623
12 अजगाद के वंशज#1,222
13 अदोनीकाम के वंशज#666
14 बिगवै के वंशज#2,056
15 आदीन के वंशज#454
16 आतेर के वंशज हिजकिय्याह के पारिवारिक पीढ़ी से#98
17 बेसै के वंशज#323
18 योरा के वंशज#112
19 हाशूम के वंशज#223
20 गिब्बार के वंशज#95
21 बेतलेहेम नगर के लोग#123
22 नतोपा के नगर से#56
23 अनातोत नगर से#128
24 अज्मावेत के नगर से#42
25 किर्यतारीम, कपीरा और बेरोत नगरों से#743
26 रामा और गेबा नगर से#621
27 मिकमास नगर से#122
28 बेतेल और ऐ नगर से#223
29 नबो नगर से#52
30 मग्बीस नगर से#156
31 एलाम नामक अन्य नगर से#1,254

32 हारीम नगर से#320
33 लोद, हादीद और ओनो नगरों से#725
34 यरीहो नगर से#345
35 सना नगर से#3,630

36 याजकों के नाम और उनकी संख्या की सूची यह है:
यदायाह के वंशज (येशू की पारिवारिक पीढ़ी से)#973
37 इम्मेर के वंशज#1,052
38 पशहूर के वंशज#1,247
39 हारीम के वंशज#1,017

40 लेवीवंशी कहे जाने वाले लेवी के परिवार की संख्या यह है:
येशू और कदमिएल होदग्याह की पारिवारिक पीढ़ी से#74

41 गायकों की संख्या यह है:
आसाप के वंशज#128

42 मन्दिर के द्वारपालों की संख्या यह है:
शल्लूम, आतेर, तल्मोन, अक्कूब, हतीता और शोबै के वंशज#139

43 मन्दिर के विशेष सेवक ये हैं:
ये सीहा, हसूपा और तब्बाओत के वंशज हैं।
44 केरोस, सीअहा, पादोन,
45 लबाना, हागाब, अक्कूब
46 हागाब, शल्मै, हानान,
47 गिद्दल, गहर, रायाह,
48 रसीन, नकोदा, गज्जाम,
49 उज्जा, पासेह, बेसै,
50 अस्रा, मूनीम, नपीसीम।
51 बकबूक, हकूपा, हर्हूर,
52 बसलूत, महीदा, हर्शा,

53 बर्कोस, सीसरा, तेमह,
54 नसीह और हतीपा।

55 ये सुलैमान के सेवकों के वंशज हैं:
सोतै, हस्सोपेरेत और परूदा की सन्तानें।
56 याला, दर्कोन, गिद्देल,
57 शपत्याह, हत्तील, पोकरेतसबायीम।
58 मन्दिर के सेवक और सुलैमान के सेवकों के कुल वंशज#392

59 कुछ लोग इन नगरों से यरूशलेम आये: तेल्मेलह, तेलहर्शा,
करूब, अद्दान और इम्मेर। किन्तु ये लोग यह प्रमाणित नहीं कर
सके कि उनके परिवार इस्राएल के परिवार से हैं।
60 उनके नाम और उनकी संख्या यह है: दलायाह, तोबिय्याह और नकोदा के वंशज#652

61 यह याजकों के परिवारों के नाम हैं:
हबायाह, हक्कोस और बर्जिल्लै के वंशज (एक व्यक्ति जिसने गिलादी के बर्जिल्लै की पुत्री से विवाह किया था और बर्जिल्लै के पारिवारिक नाम से ही जाना जाता था।)

62 इन लोगों ने अपने पारिवारिक इतिहासों की खोज की, किन्तु
उसे पा न सके। उनके नाम याजकों की सूची में नहीं सम्मिलित किये
गये थे। वे यह प्रमाणित नहीं कर सके कि उनके पूर्वज याजक थे।
इसी कारण वे याजक नहीं हो सकते थे। 63 प्रशासक ने इन लोगों
को आदेश दिया कि ये लोग कोई भी पवित्र भोजन न करें। वे तब
तक इस पवित्र भोजन नहीं खा सकते जब तक एक याजक जो
ऊरीम और तुम्मीम का उपयोग करके यहोवा से न पूछे कि क्या
किया जाये।
64-65 सब मिलाकर बयालीस हजार तीन सौ साठ लोग उन समूहों
में थे जो वापस लौट आए। इसमें उनके सात हजार तीन सौ सैंतीस

सेवक, सेविकाओं की गणना नहीं है और उनके साथ दो सौ गायक
और गायिकाएं भी थीं। 66-67 उनके पास सात सौ छत्तीस घोड़े, दो
सौ पैंतालीस खच्चर, चार सौ पैंतीस ऊँट और छः हजार सात सौ
बीस गधे थे।
68 वह समूह यरूशलेम में यहोवा के मन्दिर को पहुँचा। तब
परिवार के प्रमुखों ने यहोवा के मन्दिर को बनाने के लिये अपनी
भेंटें दी। उन्होंने जो मन्दिर नष्ट हो गया था उसी के स्थान पर नया
मन्दिर बनाना चाहा। 69 उन लोगों ने उतना दिया जितना वे दे सकते
थे। ये वे चीज़ें हैं जिन्हें उन्होंने मन्दिर बनाने के लिये दिया: लगभग
पाँच सौ किलो सोना, तीन टन चाँदी और याजकों के पहनने वाले
सौ चोगे।
70 इस प्रकार याजक, लेवीवंशी और कुछ अन्य लोग यरूशलेम
और उसके चारों ओर के क्षेत्र में बस गये। इस समूह में मन्दिर के
गायक, द्वारपाल और मन्दिर के सेवक सम्मिलित थे। इस्राएल के
अन्य लोग अपने निजी निवास स्थानों में बस गये।

3

वेदी का फिर से बनना

1 अत, सातवें महीने से इस्राएल के लोग अपने अपने नगरों में
लौट गये। उस समय, सभी लोग यरूशलेम में एक साथ इकट्ठे हुए।
वे सभी एक इकाई के रूप में संगठित थे। 2 तब योसादाक के पुत्र
येशू और उसके साथ याजकों तथा शालतीएल के पुत्र जरूब्बाबेल
और उसके साथ के लोगों ने इस्राएल के परमेश्वर की वेदी बनाई।
उन लोगों ने इस्राएल के परमेश्वर के लिये वेदी इसलिए बनाई ताकि
वे इस पर बलि चढ़ा सकें। उन्होंने उसे ठीक मूसा के नियमों के
अनुसार बनाया। मूसा परमेश्वर का विशेष सेवक था।
3 वे लोग अपने आस—पास के रहने वाले अन्य लोगों से डरे
हुए थे। किन्तु यह भय उन्हें रोक न सका और उन्होंने वेदी की
पुरानी नींव पर ही वेदी बनाई और उस पर यहोवा को होमबलि
दी। उन्होंने वे बलियाँ सवेरे और शाम को दीं। 4 तब उन्होंने आश्रयों

का पर्व ठीक वैसे ही मनाया जैसा मूसा के नियम में कहा गया है।
उन्होंने उत्सव के प्रत्येक दिन के लिये उचित संख्या में होमबलि
दी। 5 उसके बाद, उन्होंने लगातार चलने वाली प्रत्येक दिन की
होमबलि नया चाँद और सभी अन्य उत्सव व विश्राम के दिनों की
भेंटे चढ़ानी आरम्भ की जैसा कि यहोवा द्वारा आदेश दिया गया था।
लोग अन्य उन भेंटों को भी चढ़ाने लगे जिन्हें वे यहोवा को चढ़ाना
चाहते थे। 6 अत: सातवें महीने के पहले दिन इस्राएल के इन लोगों
ने यहोवा को फिर भेंट चढ़ाना आरम्भ किया। यह तब भी किया
गया जबकि मन्दिर की नींव अभी फिर से नहीं बनी थी।

मन्दिर का पुन: निर्माण

7 तब उन लोगों ने जो बन्धुवाई से छूट कर आये थे, संगतराशों
और बढ़ईयों को धन दिया और उन लोगों ने उन्हें भोजन, दाखमधु
और जैतून का तेल दिया। उन्होंने इन चीजों का उपयोग सोर और
सीदोन के लोगों को लबानोन से देवदार के लट्ठों को लाने के लिये
भुगतान करने में किया। वे लोग चाहते थे कि जापा नगर के समुद्री
तट पर लट्ठों को जहाजों द्वारा ले आएँ। जैसा कि सुलैमान ने किया
था जब उसने पहले मन्दिर को बनाया था। फारस के राजा कुस्रू ने
यह करने के लिये उन्हें स्वीकृति दे दी।

8 अत: यरूशलेम में मन्दिर पर उनके पहुँचने के दूसरे वर्ष के दूसरे
महीने मे शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल और योसादाक के पुत्र येशू
ने काम करना आरम्भ किया। उनके भाईयों, याजकों, लेवीवंशियों
और प्रत्येक व्यक्ति जो बन्धुवाई से यरूशलेम लौटे थे, सब ने उनके
साथ काम करना आरम्भ किया। उन्होंने यहोवा के मन्दिर को बनाने
के लिये उन लेवीवंशियों को प्रमुख चुना जो बीस वर्ष या उससे
अधिक उम्र के थे। 9 ये वे लोग थे जो मन्दिर के बनने की देखरेख
कर रहे थे, येशू के पुत्र और उसके भाई, कदमीएल और उसके पुत्र
(यहूदा के वंशज थे) हेनादाद के पुत्र और उनके बन्धु लेवीवंशी।
10 कारीगरों ने यहोवा के मन्दिर की नींव डालनी पूरी कर दी। जब

नींव पड़ गई तब याजकों ने अपने विशेष वस्त्र पहने। तब उन्होंने
अपनी तुरही ली और आसाप के पुत्रों ने अपने झाँझों को लिया।
उन्होंने यहोवा की स्तुति के लिये अपने अपने स्थान ले लिये। यह
उसी तरह किया गया जिस तरह करने के लिये भूतकाल में इस्राएल
के राजा दाऊद ने आदेश दिया था। 11 यहोवा ने जो कुछ किया,
उन्होंने उसके लिये उसकी प्रशंसा करते हुए तथा धन्यवाद देते हुए,
यह गीत गाया,

"वह अच्छा है,
उसका इस्राएल के लिए प्रेम शाश्वत है।"*

और तब सभी लोग खुश हुए। उन्होंने बहुत जोर से उद्घोष और
यहोवा की स्तुति की। क्यों क्योंकि मन्दिर की नींव पूरी हो चुकी
थी।
12 किन्तु बुजुर्ग याजकों में से बहुत से, लेवीवंशी और परिवार
प्रमुख रो पड़े। क्यों क्योंकि उन लोगों ने प्रथम मन्दिर को देखा था,
और वे यह याद कर रहे थे कि वह कितना सुन्दर था। वे रो पड़े जब
उन्होंने नये मन्दिर को देखा। वे रो रहे थे जब बहुत से अन्य लोग
प्रसन्न थे और शोर मचा रहे थे। 13 उद्घोष बहुत दूर तक सुना जा
सकता था। उन सभी लोगों ने इतना शोर मचाया कि कोई व्यक्ति
प्रसन्नता के उद्घोष और रोने में अन्तर नहीं कर सकता था।

4

मन्दिर के पुनः निर्माण के विरुद्ध शत्रु

1-2 उस क्षेत्र में रहने वाले वहुत से लोग यहूदा और बिन्यामीन के
लोगों के विरूद्ध थे। उन शत्रुओं ने सुना कि वे लोग जो बन्धुवाई से
आये हैं वे, इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के लिये एक मन्दिर बना रहे

* **3:11:** वह अच्छा ... शाश्वत है संभवत: इसका अर्थ यह है कि उन्होंने उस भजन को गाया जिसे हम भजन 111—118 और भजन 136 के रूप में जानते हैं।

हैं। इसलिये वे शत्रु जरुब्बाबेल तथा परिवार प्रमुखों के पास आए और उन्होंने कहा, "मन्दिर बनाने में हमें तुमको सहायता करने दो। हम लोग वही हैं जो तुम हो, हम तुम्हारे परमेश्वर से सहायता माँगते हैं। हम लोगों ने तुम्हारे परमेश्वर को तब से बलि चढ़ाई है जब से अश्शूर का राजा एसर्हद्दोन हम लोगों को यहाँ लाया।"

3 किन्तु जरुब्बाबेल, येशू और इस्राएल के अन्य परिवार प्रमुखों ने उत्तर दिया, "नहीं, तुम जैसे लोग हमारे परमेश्वर के लिये मन्दिर बनाने में हमें सहायता नहीं कर सकते। केवल हम लोग ही यहोवा के लिये मन्दिर बना सकते हैं। वह इस्राएल का परमेश्वर है। फारस के राजा कुस्रू ने जो करने का आदेश दिया है, वह यही है।"

4 इससे वे लोग क्रोधित हो उठे। अत: उन लोगों ने यहूदियों को परेशान करना आरम्भ किया। उन्होंने उनको हतोत्साह और मन्दिर
को बनाने से रोकने का प्रयत्न किया। 5 उन शत्रुओं ने सरकारी
अधिकारियों को यहूदा के लोगों के विरुद्ध काम करने के लिए खरीद लिया। उन अधिकारियों ने यहूदियों द्वारा मन्दिर को बनाने की योजना को रोकने के लिए लगातार काम किया। यह उस दौरान तब तक लगातार चलता रहा जब तक कुस्रू फारस का राजा रहा और बाद में जब तक दारा फारस का राजा नहीं हो गया।

6 उन शत्रुओं ने यहूदियों को रोकने के लिये प्रयत्न करते हुए फारस के राजा को पत्र भी लिखा। उन्होंने यह पत्र तब लिखा था जब क्षयर्ष* फारस का राजा बना।

यरूशलेम के पुनः निर्माण के विरुद्ध शत्रु

7 बाद में, जब अर्तक्षत्र† फारस का नया राजा हुआ, इन लोगों में से कुछ ने यहूदियों के विरुद्ध शिकायत करते हुए एक और पत्र लिखा। जिन लोगों ने वह पत्र लिखा, वे ये थे: बिशलाम, मिथदात,

---

* **4:6:** क्षयर्ष फारस का राजा लगभग ई. पू. 485—465 † **4:7:** अर्तक्षत्र फारस का राजा लगभग ई. पू. 465—424 यह क्षयर्ष का पुत्र था।

ताबेल और उसके दल के अन्य लोग। उन्होंने पत्र राजा अर्तक्षत्र
को अरामी में अरामी लिपि का उपयोग करते हुए लिखा।

8 ‡ तब शासनाधिकारी रहूम और सचिव शिलशै ने यरूशलेम के
लोगों के विरुद्ध पत्र लिखा। उन्होंने राजा अर्तक्षत्र को पत्र लिखा।
उन्होंने जो लिखा वह यह था:

9 शासनाधिकारी रहूम, सचिव शिमशै, तथा तर्पली, अफ़ारसी,
एरेकी, बाबेली और शूशनी के एलामी लोगों के न्यायाधीश और
महत्वपूर्ण अधिकारियों की ओर से, 10 तथा वे अन्य लोग जिन्हें
महान और शक्तिशाली ओस्नप्पर ने शोमरोन के नगरों एवं परात
नदी के पश्चिमी प्रदेश के अन्य स्थानों पर बसाय था।

11 यह उस पत्र कि प्रतिलिपि है जिसे उन लोगों ने अर्तक्षत्र को
भेजा था।

राजा अर्तक्षत्र को, परात नदी के पश्चिमी क्षेत्र में रहने वाले आप
के सेवकों की ओर से है।

12 राजा अर्तक्षत्र हम आपको सूचित करना चाहते हैं कि जिन
यहूदियों को आपने—अपने पास से भेजा है, वे यहाँ आ गये हैं। वे
यहूदी उस नगर को फिर से बनाना चाहते हैं। यरूशलेम एक बुरा
नगर है। उस नगर के लोगों ने अन्य राजाओं के विरूद्ध सदैव
विद्रोह किया है। अब वे यहूदी परकोटे की नींवों को पक्का कर
रहे हैं और दीवारें खड़ी कर रहे हैं।§
13 राजा अर्तक्षत्र आपको यह भी जान लेना चाहिये कि यदि
यरूशलेम और इसके परकोटे फिर बन गए तो यरूशलेम के लोग
कर देना बन्द कर देंगे। वे आपका सम्मान करने के लिये धन

‡ **4:8:** यहाँ मूल भाषा हिब्रू से अरामी भाषा हो गई हैं। § **4:12:** अब ... रहे हैं यह नगर को सुरक्षित रखने का तरीका था, किन्तु ये लोग राजा को यह विचार करने वाला बनाना चाहते थे कि यहूदी उसके विरूद्ध विद्रोह करने की तैयारी कर रहे हैं।

भेजना बन्द कर देंगे। वे सेवा कर देना भी रोक देंगे और राजा को उस सारे धन से हाथ धोना पड़ेगा।

14 हम लोग राजा के प्रति उत्तरदायी हैं। हम लोग यह सब घटित होना नहीं देखना चाहते। यही कारण है कि हम लोग यह पत्र राजा को सूचना के लिये भेज रहे हैं।

15 राजा अर्तक्षत्र हम चाहते हैं कि आप उन राजाओं के लेखों का पता लगायें जिन्होंने आपके पहले शासन किये। आप उन लेखों में देखेंगे कि यरूशलेम ने सदैव अन्य राजाओं के प्रति विद्रोह किया। इसने अन्य राजाओं और राष्द्रों के लिये बहुत कठिनाईयाँ उत्पन्न की है। प्राचीन काल से इस नगर में बहुत से विद्रोह का आरम्भ हुआ हैं! यही कारण है कि यरूशलेम नष्ट हुआ था!

16 राजा अर्तक्षत्र हम आपको सूचित करना चाहते हैं कि यदि यह नगर और इसके परकोटे फिर से बन गई तो फरात नदी के पश्चिम के क्षेत्र आप के हाथ से निकल जाएँगे।

17 तब अर्तक्षत्र ने यह उत्तर भेजा:

शासनाधिकारी रहूम और सचिव शिमशै और उन के सभी साथियों को जो शोमरोन और परात नदी के अन्य पश्चिमी प्रदेश में रहते है, को अपना उत्तर भेजा।

अभिवादन,

18 तुम लोगों ने जो हमारे पास पत्र भेजा उसका अनुवाद हुआ
और मुझे सुनाया गया। 19 मैंने आदेश दिया कि मेरे पहले के
राजाओं के लेखों की खोज की जाये। लेख पढ़े गये और हम लोगों को ज्ञात हुआ कि यरूशलेम दूरा राजाओं के विरूद्ध विद्रोह करने का एक लम्बा इतिहास है। यरूशलेम ऐसा स्थान रह है
जहाँ प्राय: विद्रोह और क्रान्तियाँ होती रही हैं। 20 यरूशलेम और
फरात नदी के पश्चिम के पूरे क्षेत्र पर शक्तिशाली राजा राज्य करते

रहे हैं। राज्य कर और राजा के सम्मान के लिये धन और विविध
प्रकार के कर उन राजाओं को दिये गए हैं।
21 अब तुम्हें उन लोगों को काम बन्द करने के लिये एक
आदेश देना चाहिए। यह आदेश यरूशलेम के पुन: निर्माण को
रोकने के लिये तब तक है, जब तक कि मैं वैसा करने की आज्ञा
न दूँ। 22 इस आज्ञा की उपेक्षा न हो, इसके लिये सावधान रहना।
हमें यरूशलेम के निर्माण कार्य को जारी नहीं रहने देना चाहिए।
यदि काम चलता रहा तो मुझे यरूशलेम से आगे कुछ भी धन
नहीं मिलेगा।

23 सो उस पत्र की प्रतिलिपि, जिसे राजा अर्तक्षत्र ने भेजा रहुम,
सचिव शिमशै और उनके साथ के लोगों को पढ़कर सुनाई गई।
तब वे लोग बड़ी तेज़ी से यरूशलेम में यहूदियों के पास गए। उन्होंने
यहुदियों को निर्माण कार्य बन्द करने को विवश कर दिया।

मन्दिर का कार्य रुका

24 इस प्रकार यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर का काम रुका
गया। फारस के राजा दारा के शासनकाल के दूसरे वर्ष तक यह
कार्य नहीं चला।

5

1 तब हाग्गै* नबी और इद्दो के पुत्र जकर्याह† ने इस्राएल के
परमेश्वर के नाम पर भविष्यवाणी करनी आरम्भ की। उन्होंने यहूदा
और यरूशलेम में यहूदियों को प्रोत्साहित किया। 2 अतःशालतीएल
का पुत्र जरूब्बाबेल और योसादाक का पुत्र येशु ने फिर यरूशलेम
में मन्दिर का निर्माण करना आरम्भ कर दिया। सभी परमेश्वर के नबी
उनके साथ थे और कार्य में सहायता कर रहे थे। 3 उस समय फरात
नदी के पश्चिम के क्षेत्र का राज्यपाल तत्तनै था। तत्तनै, शतर्बेजनै और
उनके साथ के लोग जरूब्बाबेल और येशु ताथ निर्माण करने वालों

* **5:1:** हाग्गै देखें हाग्गै 1:1 † **5:1:** इद्दो … जकर्याह देखें जकर्याह 1:1

के पास गए। तत्तनै और उसके साथ के लोगों ने जरूब्बाबेल और
उसके साथ के लोगों से पूछा, "तुम्हें इस मन्दिर को फिर से बनाने
और इस की छत का काम पूरा करने का आदेश किसने दिया?"
4 उन्होंने जरूब्बाबेल से यह भी पुछा, "जो लोग इस इमारत को
बनाने का काम रहे है उनके नाम क्या हैं?"

5 किन्तु परमेश्वर यहूदी प्रमुखों पर दृष्टि रख रहा था। निर्माण करने
वालों को तब तक काम नहीं रोकना पड़ा जब तक उसका विवरण
राजा दारा को न भेज दिया गया। वे तब तक काम करते रहे जब
तक राजा दारा ने अपना उत्तर वापस नहीं भेजा।

6 फ़रात के पश्चिम के क्षेत्रों के शासनाधिकारी तत्तनै, शतर्बोजनै
और उनके साथ के महत्वपूर्ण व्यक्तियों ने राजा दारा के पास पत्र
भेजा। 7 यह उस पत्र की प्रतिलिपि है:

राजा दारा को अभिवादन

8 राजा दारा, आपको ज्ञात होना चाहिए कि हम लोग यहूदा
प्रदेश में गए। हम लोग महान परमेश्वर के मन्दिर को गए। यहूदा
के लोग उस मन्दिर को बड़े पत्थरों से बना रहे हैं। वे दीवरों में
लकड़ी की बड़ी—बड़ी शहतीरें डाल रहे हैं। काम बड़ी सावधानी
से किया जा रहा है, और यहूदा के लोग बहुत परिश्रम कर रहे
हैं। वे बड़ी तेज़ी से निर्माण कार्य कर रहे हैं और यह शीघ्र ही पूरा
हो जाएगा।
9 हम लोगों ने उनके प्रमुखों से कुछ प्रश्न उनके निर्माण कार्य
के बारे में पूछा। हम लोगों ने उनसे पूछा, "तुम्हें इस मन्दिर को
फिर से बनाने और इस की छत का काम पूरा करने की स्वीकृति
किसने दी है?" 10 हम लोगों के उनके नाम भी पूछे। हम लोगों
ने उन लोगों के प्रमुखों के नाम लिखना चाहा जिससे आप जान
सकें कि वे कौन लोग हैं।
11 उन्होंने हमें यह उत्तर दिया:

“हम लोग स्वर्ग और पृथ्वी के परमेश्वर के सेवक हैं। हम लोग उसी मन्दिर को बना रहे हैं जिसे बहुत वर्ष पहले इस्राएल
के एक महान राजा ने बनाया और पूरा किया था। 12 किन्तु हमारे
पूर्वजों ने स्वर्ग के परमेश्वर को क्रोधित किया। इसलिये परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों को बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर को दिया। नबूकदनेस्सर ने इस मन्दिर को नष्ट किया और उसने लोगों को
बन्दी के रूप में बाबेल जाने को विवश किया। 13 किन्तु बाबेल
पर कुस्रू के राजा होने के प्रथम वर्ष में राजा कुस्रू ने परमेश्वर के मन्दिर को फिर से बनाने के लिए विशेष आदेश दिया। 14 कुस्रू
ने बाबेल में अपने असत्य देवता के मन्दिर से उन सोने चाँदी की चीज़ों को निकाला जो भूतकाल में परमेश्वर के मन्दिर से लूट कर ले जाई गइ थीं। नबूकदनेस्सर ने उन चीज़ों को यरूशलेम के मन्दिर से लूटा और उन्हें बाबेल में अपने असत्य देवताओं के मन्दिर में ले आया। तब राजा कुस्रू ने उन सोने चाँदी की चीजों को शेशबस्सर (जरूब्बाबेल) को दे दिया।” कुस्रू ने शेशबस्सर को प्रशासक चुना था।

15 कुस्रू ने तब शेशबस्सर (जरूब्बाबेल) से कहा था, “इन सोने चाँदी की चीज़ों को लो और उन्हें यरूशलेम के मन्दिर में वापस रखो। उसी स्थान पर परमेश्वर के मन्दिर को बनाओ जहाँ वह पहले था।”

16 अत: शेशबस्सर (जरूब्बाबेल) आया और उसने यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर की नींव का काम पूरा किया। उस दिन से आज तक मन्दिर के निर्माण का काम चलता आ रहा है। किन्तु यह अभी तक पूरा नहीं हुआ है।

17 अब यदि राजा चाहते हैं तो कृपया वे राजाओं के लेखों को खोजें। यह देखने के लिए खोज करें की क्या राजा कुस्रू द्वारा यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर को फिर से बनाने का दिया गया

आदेश सत्य है और तब, महामहिम, कृपया आप हम लोगों को पत्र भेजें जिससे हम जान सकें कि आपने इस विषय में क्या करने का निर्णय लिया है।

6

दारा का आदेश

1 अत: राजा दारा ने अपने पूर्व के राजाओं के लेखों की जाँच
करने का आदेश दिया। वे लेख बाबेल में वहीं रखे थे जहाँ खज़ाना
रखा गया था। 2 अहमत्ता के किले में एक दण्ड में लिपटा गोल
पत्रक मिला। (एकवतन मादे प्रान्त में है।) उस दण्ड में लिपटे गोल
पत्रक पर जो लिखा था, वह यह है:

सरकारी टिप्पणी: 3 कुस्रू के राजा होने के प्रथम वर्ष में कुस्रू
ने यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर के लिये एक आदेश दिया।
आदेश यह था:

परमेश्वर का मन्दिर फिर से बनने दो। यह बलि भेंट करने का
स्थान होगा। इसकी नींव को बनने दो। मन्दिर साठ हाथ ऊँचा
और साठ हाथ चौड़ा होना चाहिए। 4 इसके परकोटे में विशाल
पत्थरों की तीन कतारें और विशाल लकड़ी के शहतीरों की एक
कतार होनी चाहिए। मन्दिर को बनाने का व्यय राजा के खज़ाने
से किया जाना चाहिये। 5 साथ ही साथ, परमेशवर के मन्दिर
की सोने और चाँदी की चीज़ें उनके स्थान पर वापस रखी जानी
चाहिए। नबूकदनेस्सर ने उन चीज़ों को यरूशलेम के मन्दिर से
लिया था और उन्हें बाबेल लाया था। वे परमेश्वर के मन्दिर में
वापस रख दिये जाने चाहियें।

6 इसलिये अब, मैं दारा,

फरात नदी के पश्चिम के प्रदेशों के शासनाधिकारी तत्तनै और शतर्बोजनै और उस प्रान्त के रहने वाले सभी अधिकारियों, तुम्हें

आदेश देता हूँ कि तुम लोग यरूशलेम से दूर रहो। 7 श्रमिकों को
परेशान न करो। परमेश्वर के उस मन्दिर के काम को बन्द करने
का प्रयत्न मत करो। यहूदी प्रशासक और यहूदी प्रमुखों को इन्हें
फिर से बनाने दो। उन्हें परमेश्वर के मन्दिर को उसी स्थान पर
फिर से बनाने दो जहाँ यह पहले था।

8 अब मैं यह आदेश देता हूँ, तुम्हें परमेश्वर के मन्दिर को बनाने
वाले यहूदी प्रमुखों के लिये यह करना चाहिये: इमारत की लागत
का भुगतान राजा के खज़ाने से होना चाहिये। यह धन फ़रात नदी
के पश्चिम के क्षेत्र के प्रान्तों से इकट्ठा किये गये राज्य कर से
आयेगा। ये काम शीघ्रता से करो, जिससे काम रूके नहीं। 9 उन
लोगों को वह सब दो जिसकी उन्हें आवश्यकता हो। यदि उन्हें
स्वर्ग के परमेश्वर को बलि के लिये युवा बैलों, मेढ़ों या मेमनों
की जरूरत पड़े तो उन्हें वह सब कुछ दो। यदि यरूशलेम के
याजक गेहूँ, नमक, दाखमधु और तेल माँगे तो बिना भूल चूक के
प्रतिदिन ये चीज़ें उन्हें दो। 10 उन चीज़ों को यहूदी याजकों को दो
जिससे वे ऐसी बलि भेंट करें कि जिससे स्वर्ग का परमेश्वर प्रसन्न
हो। उन चीज़ों को दो जिससे याजक मेरे और मेरे पुत्रों के लिये
प्रार्थना करें।

11 मैं यह आदेश भी देता हूँ कि यदि कोई व्यक्ति इस आदेश
को बदलता है तो उस व्यक्ति के मकान से एक लकड़ी की कड़ी
निकाल लेनी चाहिए और उस लकड़ी की कड़ी को उस व्यक्ति
की शरीर पर धँसा देना चाहिये और उसके घर को तब तक नष्ट
किया जाना चाहिये जब तक कि वह पत्थरों का ढेर न बन जाये।

12 परमेश्वर यरूशलेम पर अपना नाम अंकित करे और मुझे
आशा है कि परमेश्वर किसी भी उस राजा या व्यक्ति को पराजित
करेगा जो इस आदेश को बदलने का प्रयत्न करता है। यदि कोई
यरूशलेम में इस मन्दिर को नष्ट करना चाहता है तो मुझे आशा
है कि परमेश्वर उसे नष्ट कर देगा।

मैं (दारा) ने, यह आदेश दिया है। इस आदेश का पालन शीघ्र

और पूर्ण रूप से होना चाहिए!

मन्दिर का पूर्ण और समर्पित होना

13 अत: फ़रात नदी के पश्चिम क्षेत्र के प्रशासक तत्तनै, शतर्बोजनै
और उसके साथ के लोगों ने राजा दारा के आदेश का पालन किया।
उन लोगों ने आज्ञा का पालन शीघ्र और पूर्ण रूप से किया। 14 अत:
यहूदी अग्रजों (प्रमुखों) ने निर्माण कार्य जारी रखा और वे सफल
हुए क्योंकि हाग्गै नबी और इद्दो के पुत्र जकर्याह ने उन्हें प्रोत्साहित
किया। उन लोगों ने मन्दिर का निर्माण कार्य पूरा कर लिया। यह
इस्राएल के परमेश्वर के आदेश का पालन करने के लिये किया गया।
यह फारस के राजाओं, कुस्रू, दारा और अर्तक्षत्र ने जो आदेश दिये
थे उनका पालन करने के लिये किया गया। 15 मन्दिर का निर्माण
अदर महीने के तीसरे दिन पूरा हुआ।* यह राजा दारा के शासन के
छठें वर्ष में हुआ।†

16 तब इस्राएल के लोगों ने अत्यन्त उल्लास के साथ परमेश्वर के
मन्दिर का समर्पण उत्सव मनाया। याजक, लेवीवंशी, और बन्धुवाई
से वापस आए अन्य सभी लोग इस उत्सव में सम्मिलित हुये।

17 उन्होंने परमेश्वर के मन्दिर को इस प्रकार समर्पित किया:
उन्होंने एक सौ बैल, दो सौ मेढ़े और चार सौ मेमने भेंट किये और
उन्होंने पूरे इस्राएल के लिये पाप भेंट के रूप में बारह बकरे भेंट
किये अर्थात् इस्राएल के बारह परिवार समूह में से हर एक के लिए
एक बकरा भेंट किया। 18 तब उन्होंने यरूशलेम में मन्दिर में सेवा
करने के लिये याजकों और लेवीवंशियों के समूह बनाये। यह सब
उन्होंने उसी प्रकार किया जिस प्रकार मूसा की पुस्तक में बताया
गया है।

फसह पर्व

* **6:15:** मन्दिर … पूरा हुआ यह दिन मार्च के महिने में था। कुछ प्राचीन लेखक इसे “अदर का 23 वां दिन” कहते हैं। † **6:15:** यह … हुआ अर्थात् ई. पू. 515

19 ‡ पहले महीने के चौदहवें दिन उन यहूदियों ने फसह पर्व
मनाया जो बन्धुवाई से वापस लौटे थे। 20 याजकों और लेविवंशियों
ने अपने को शुद्ध किया। उन सभी ने फसह पर्व मनाने के लिये
अपने को स्वच्छ और तैयार किया। लेविवंशियों ने बन्धुवाई से
लौट ने वाले सभी यहूदियों के लिये फसह पर्व के मेमने को मारा।
उन्होंने यह अपने लिये और अपने याजक बंधु ओं के लिये किया।
21 इसलिये बन्धुवाई से लौटे इस्राएल के सभी लोगों ने फसह पर्व
का भोजन किया। अन्य लोगों ने स्नान किया और अपने आपको
उन अशुद्ध चीज़ों से अलग हट कर शुद्ध किया जो उस प्रदेश में रहने
वाले लोगों की थीं। उन शुद्ध लोगों ने भी फसह पर्व के भोजन में
हिस्सा लिया। उन लोगों ने यह इसलिये किया, कि वे यहोव इस्राएल
के परमेश्वर के पास सहायता के लिये जा सकें। 22 उन्होंने अखमीरी
रोटी का उत्सव सात दिन तक बहुत अधिक प्रसन्नता से मनाया।
यहोवा ने उन्हें बहुत प्रसन्न किया क्योंकि उसने अश्शूर के राजा के
व्यवहार को बदल दिया था। अत: अश्शूर के राजा ने परमेश्वर के
मन्दिर को बनाने में उनकी सहायता की थी।

7

एज्रा यरूशलेम आत है

1 फारस के राजा अर्तक्षत्र के शासनकाल में इन सब बातों के
हो जाने के बाद* एज्रा बाबेल से यरूशलेम आया। एज्रा सरायाह
का पुत्र था। सरायाह अजर्याह का पुत्र था। अजर्याह हिलकिय्याह
का पुत्र था। 2 हिल्किय्याह शल्लमू का पुत्र था। शल्लूम सादोक का
पुत्र था। सादोक अहीतूब का पुत्र था। 3 अहीतूब अमर्याह का पुत्र
था। अमर्याह अजर्याह का पुत्र था। अजर्याह मरायोत का पुत्र था।

‡ **6:19:** यहाँ मूल पद अरामिक भाषा में है यहाँ से आगे अब फिर हिब्रू भाषा हो गई है।

* **7:1:** इन सब ... बाद एज्रा के अध्याय 6 और अध्याय 7 के बीच 58 वर्ष के समय का अन्तर है। एस्तेर की पुस्तक की घटनाएँ इन दोनों अध्यायों के समय की बीच की है।

4 मरायोत जरह्याह का पुत्र था। जरह्याह उज्जी का पुत्र था। उज्जी
बुक्की का पुत्र था। 5 बुक्की अबीशू का पुत्र था। अबीशू पीनहास का
पुत्र था। पीनहास एलीआज़र का पुत्र था। एलीआज़र महायाजक
हारून का पुत्र था।

6 एज्रा बाबेल से यरूशलेम आया। एज्रा का शिक्षक था। वह
मूसा के नियमों को अच्छी तरह जानता था। मूसा का नियम यहोवा
इस्राएल के परमेश्वर द्वारा दिया गया था। राजा अर्तक्षत्र ने एज्रा को
वह हर चीज़ दी जिसे उसने माँगा क्योंकि यहावा परमेशवर एज्रा के
साथ था। 7 इस्राएल के बहुत से लोग एज्रा के साथ आए। वे याजक
लेवीवंशी, गायक, द्वारपाल और मन्दिर के सेवक थे। इस्राएल के वे
लोग अर्तक्षत्र के शासनकाल के सातवें वर्ष यरूशलेम आए। 8 एज्रा
यरूशलेम में राजा अर्तक्षत्र के राज्यकाल के सातवें वर्ष के पाँचवें
महीन में आया। 9 एज्रा और उसके समूह ने बाबेल को पहले महीने
के पहले दिन छोड़ा। वह पाँचवें महीने के पहले दिन यरूशलेम
पहुँचा। यहोव परमेशवर एज्रा के साथ था। 10 एज्रा ने अपना पूरा
समय और ध्यान यहोवा के नियमों को पढ़ने और उनके पालन
करने में दिय। एज्रा इस्राएल के लोगों को यहोवा के नियमों और
आदेशों की शिक्षा देना चाहता था और वह इस्राएल में लोगों को
उन नियमों का अनुसरण करने में सहायता देना चाहता था।

राजा अर्तक्षत्र का एज्रा को पत्र

11 एज्रा एक याजक और शिक्षक था। इस्राएल को यहोवा द्वारा
दिये गए आदेशों और नियमों के बारे में वह पर्याप्त ज्ञान रखता था।
यह उस पत्र की प्रतिलिपि है जिसे राजा अर्तक्षत्र ने उपदेशक एज्रा
को दिया था।

12 † राजा अर्तक्षत्र की ओर से,
याजक एज्रा को जो स्वर्ग के परमेशवर के नियमों का शिक्षक है:

† **7:12:** से इस पुस्तक का मूल पाठ हिब्रू से अरामी भाषा में हो गया है।

अभिवादन!
13 मैं यह आदेश देता हूँ: कोई व्यक्ति, याजक या इस्राएल का लेवीवंशी जो मेरे राज्य में रहता है और एज्रा के साथ यरूशलेम जाना चाहता है, जा सकता है।

14 एज्रा, मैं और मेरे सात सलाहकार तुम्हें भेजते हैं। तुम्हें यहूदा और यरूशलेम को जाना चाहिये। यह देखो कि तुम्हारे लोग तुम्हारे परमेश्वर के नियमों का पालन कैसे कर रहे हैं। तुम्हारे पास वह नियम है।

15 मैं और मेरे सलाहकार इस्राएल के परमेशवर को सोना—
चाँदी दे रहे हैं। परमेश्वर का निवास यरूशलेम में है। तुम्हें यह
सोना चाँदी अपने साथ ले जाना चाहिये। 16 तुम्हें बाबेल के
सभी प्रान्तों से होकर जाना चाहिये। अपने लोगों,याजकों और
लेवीवंशियों से भी भेटें इकट्ठी करो। ये भेटें उनके यरूशलेम में
परमेश्वर के मन्दिर के लिये हैं।

17 इस धन का उपयोग बैल, मेढ़े और नर मेमने खरीदने में
करो। उन बलियों के साथ जो अन्न भेंट और पेय भेंट चढ़ाई
जानी है, उन्हें खरीदो। तब उन्हें यरूशलेम में अपने परमेश्वर के
मन्दिर की वेदी पर बलि चढ़ाओ। 18 उसके बाद तुम और अन्य
यहूदी बचे हुये सोने चाँदी को जैसे भी चाहो, खच कर सकते
हो। इसका उपयोग वैसे ही करो जो तुम्हारे परमेश्वर को प्रसन्न
करने वाला हो। 19 उन सभी चीज़ों को यरूशलेम के परमेश्वर के
पास ले जाओ। वे चीज़ें तुम्हारी परमेश्वर के मन्दिर में उपासना
के लिये हैं। 20 तुम कोई भी अन्य चीज़ों ले सकते हो जिन्हें तुम
अपने परमेश्वर के मन्दिर के लिये आवश्यक समझते हो। राजा
के खज़ाने के धन का उपयोग जो कुछ तुम चाहते हो उसके
खरीदने के लिये कर सकते हो।

21 अब मैं, राजा अर्तक्षत्र यह आदेश देता हूँ: मैं उन सभी लोगों को जो फरात नदी के पश्चिमी क्षेत्र में राजा के कोषपाल हैं, आदेश देता हूँ कि वे एज्रा को जो कुछ भी वह माँगे दें। एज्रा स्वर्ग के

परमेश्वर के नियमों का शिक्षक और याजक है। इस आदेश का
शीघ्र और पूर्ण रूप से पालन करो। 22 एज्रा को इतना तक दे दो:
पौने चार टन चाँदी, छ: सौ बुशल गेहूँ, छ: सौ गैलन दाखमधु,
छ: सौ गैलन जैतून का तेल और उतना नमक जितना एज्रा चाहे।
23 स्वर्ग का परमेश्वर, एज्रा को जिस चीज़ को पाने के लिये आदेश
दे उसे तुम्हें शीघ्र और पूर्ण रूप से एज्रा को देना चाहिये। स्वर्ग के
परमेश्वर के मन्दिर के लिये ये सब चीज़ें करो। हम नाही चाहते
कि परमेश्वर मेरे राज्य या मेरे पुत्रों पर क्रोधित हो।

24 मैं चाहता हूँ कि तुम लोगों को ज्ञात हो कि याजकों, लेवियों,
गायकों, द्वारपालों और परमेश्वर के मन्दिर के अन्य कर्मचारियों
ताथ सेवकों को किसी भी प्रकार का कर देने के लिये बाध्य
करना, नियम के विरोध है। 25 एज्रा मैं तुम्हें तुम्हारे परमेश्वर द्वारा
प्राप्त बुद्धि के उपयोग तथा सरकारी और धार्मिक न्यायाधीशों
को चुनने का अधिकार देता हूँ। ये लोग फरात नदी के पश्चिम
में रहने वाले सभी लोगों के लिये न्यायाधीश होंगे। वे उन सभी
लोगों का न्याय करेंगे जो तुम्हारे परमेश्वर के नियमों को जानते हैं।
यदि कोई व्यक्ति उन नियमों को नहीं जानता तो वे न्यायाधीश
उसे उन नियमों को बताएंगे। 26 यदि कोई ऐसा व्यक्ति हो जो
तुम्हारे परमेश्वर के नियमों या राजा के नियमों का पालन नाहीं
करता हो, तो उसे अवश्य दण्डित किया जाना चाहिये। अपराध
के अनुसार उसे मृत्यु दण्ड, देश निकाला, उसकी सम्पत्ति को
जब्त करना या बन्दीगृह में डालने का दण्ड दिया जाना चाहिए।

एज्रा परमेश्वर की स्तुति करता ह

27 ‡ हमारे पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा की स्तुति करो। उस ने
राजा के मन में ये विचार डाला कि वह यरूशलेम में यहोवा के
मन्दिर का सम्मान करे। 28 यहोवा ने राजा, उसके सलाहकारों और
बड़े अधिकारियों के सामने मुझ पर अपना सच्चा प्रेम प्रकट किया।

‡ **7:27:** इस पुस्तक का मूल पाठ अरामी भाषा से हिब्रू भाषा में हो गया है।

यहोवा मेरा परमेश्वर मेरे साथ था, अत: मैं साहसी रहा और मैंने इस्राएल के प्रमुखों को अपने साथ यरूशलेम जाने के लिये इकट्ठा किया।

8

एज्रा के साथ लौटने वाले परिवार प्रमुखों की सूची

1 यह बाबेल से यरूशलेम लौटने वाले परिवार प्रमुखों और अन्य लोगों की सूची है जो मेरे (एज्रा) के साथ लौटे। हम लोग राजा अर्तक्षत्र के शासनकाल में यरूशलेम लौटे। यह नामों की सूची है:

2 पीनहास के वंशजों में से गेर्शोम था: ईतामार के वंशजों में से दानिय्येल था: दाऊद के वंशजों में से हत्तूस था;
3 शकन्याह के वंशजों में से परोश, जकर्याह के वंशज तथा डेढ़ सौ अन्य लोग:
4 पहत्मोआब के वंशजों में से जरह्याह का पुत्र एल्यहोएनै और अन्य दो सौ लोग;
5 जत्तु के वंशजों में से यहजीएल का पुत्र शकन्याह और तीन सौ अन्य लोग;
6 आदीन के वंशजों में से योनातान का पुत्र एबेद, और पचास अन्य लोग;
7 एलाम के वंशजों में से अतल्याह का पुत्र यशायाह और सत्तर अन्य लोग;
8 शपत्याह के वंशजों में से मीकाएल का पुत्र जबद्याह और अस्सी अन्य लोग;
9 योआब के वंशजों में से यहीएल का पुत्र ओबद्याह और दो सौ अट्ठारह अन्य व्यक्ति;
10 शलोमति के वंशजों में से योसिय्याह का पुत्र शलोमति और एक सौ साठ अन्य लोग;

11 बेबै के वंशजों में से बेबै का पुत्र जकर्याह और अट्ठाईस अन्य व्यक्ति;
12 अजगाद के वंशजों में से हक्कातान का पुत्र योहानान, और एक सौ दस अन्य लोग;
13 अदोनीकाम के अंतिम वंशजों में से एलीपेलेत, यीएल, समायाह और साठ अन्य व्यक्ति थे;
14 बिगवै के वंशजों में से ऊतै, जब्बूद और सत्तर अन्य लोग।

यरूशलेम को वापसी

15 मैंने (एज्रा) उन सभी लोगों को अहवा की और बहने वाली नदी
के पास एक साथ इकट्ठा होने को बुलाथा। हम लोगों ने वहँ तीन
दिन तक डेरा डाला। मुझे यह पता लगा कि उस समूह में याजक थे,
किन्तु कोई लेवीवंशी नहीं था। 16 सो मैंने इन प्रमुखों को बुलाया:
एलीएजेर, अरीएल, शमायाह, एलनातान, यारीब, एलनातान, नातान,
जकर्याह और मशुल्लाम और मैंने योयारीब और एलनातान (ये लोग
शिक्षक थे) को बुलाया। 17 मैंने उन व्यक्तियों को इद्दो के पास भेजा।
इद्दो कासिप्या नगर का प्रमुख है। मैंने उन व्यक्ति को बताया कि वे
इद्दो और उसके सम्बन्धियों से क्या कहें। उसके सम्बन्धि कासिप्या
में मन्दिर के सेवक हैं। मैंने उन लोगों को इद्दो के पास भेजा जिससे
इद्दो परमेश्वर के मन्दिर में सेवा करने के लिये हमारे पास सेवकों
को भेजे। 18 क्योंकि परमेश्वर हमारे साथ था, इद्दो के सम्बन्धियों
ने इन लोगों को हमारे पास भेजा: महली के वंशजों में से शेरेब्याह
नामक बुद्धिमान व्यक्ति। महली लेवी के पुत्रों में से एक था। (लेवी
इस्राएल के पुत्रों में से एक था।) उन्होंने हमारे पास शेरेब्याह के
पुत्रों और बन्धुओं को भेज। ये सब मिलाकर उस परिवार से ये
अट्ठारह व्यक्ति थे। 19 उन्होंने मरारी के वंशजों में से हशब्याह और
यशायाह को भी उनके बन्धुओं और उनके पुत्रों के साथ भेजा। उस
परिवार से कुल मिलाकर बीस व्यक्ति थे। 20 उन्होंने मन्दिर के दो
सौ बीस सेवक भी भेजे। उनके पूर्वज वे लोग थे जिन्हें दाऊद और

बड़े अधिकारियों ने लेवीवंशियों की सहायता के लिये चुना था।
उन सबके नाम सूची में लिखे हुए थे।

21 वहाँ अहवा नदी के पास, मैंने (एज्रा) घोषणा की कि हमें
उपवास रखना चाहिये। हमें अपने को परमेश्वर के सामने विनम्र
बनाने के लिये उपवास रखना चाहिये। हम लोग परमेश्वर से अपने
लिये, अपने बच्चों के लिये, और जो चीज़ें हमारी थीं, उनके साथ
सुरक्षित यात्रा के लिये प्रार्थना करना चाहते थे। 22 राजा अर्तक्षत्र से,
अपनी यात्रा के समय अपनी सुरक्षा के लिये सैनिक और घुड़सवारों
को माँगने में मैं लज्जित था। सड़क पर शत्रु थे। मेरी लज्जा का
कारण यह था कि हमने राजा से कह रखा था कि, "हमारा परमेश्वर
उस हर व्यक्ति के साथ है जो उस पर विश्वास करता है और परमेश्वर
उस हर एक व्यक्ति पर क्रोधित होता है जो उससे मुँह फेर लेता है।"
23 इसलिये हम लोगों ने अपनी यात्रा के बारे में उपवास रखा और
परमेश्वर से प्रार्थना की। उसने हम लोगों की प्रार्थना सुनी।

24 तब मैंने याजकों में से बारह को नियुक्त किया जो प्रमुख थे। मैंने
शेरेब्याह, हशब्याह और उनके दस भाईयों को चुना। 25 मैंने चाँदी,
सोना और अन्य चीज़ों को तौला जो हमारे परमेश्वर के मन्दिर के
लिये दी गई थीं। मैंने इन चीज़ों को उन बारह याजकों को दिया जिन्हें
मैंने नियुक्त किया था। राजा अर्तक्षत्र, उसके सलाहकार, उसके बड़े
अधिकारियों और बाबेल में रहने वाले सभी इस्राएलियों ने परमेश्वर
के मन्दिर के लिये उन चीजों को दिया। 26 मैंने इन सभी चीज़ों को
तौला। वहाँ चाँदी पच्चीस टन थी। वहाँ चाँदी के प्रात्र व अन्य वस्तुएं
थी। जिन का भार पौने चार किलोग्राम था। वहाँ सोना पौने चार टन
था। 27 और मैंने उन्हें बीस सोने के कटोरे दिये। कटोरों का वज़न
लगभग उन्नीस पौंड था और मैंने उन्हें झलकाये गये सुन्दर काँसे
के दो पात्र दिए जो सोने के बराबर ही कीमती थे। 28 तब मैंने उन
बारह याजकों से कहा: "तुम और ये चीज़ें यहोवा के लिये पवित्र
हैं। लोगों ने यह चाँदी और सोना यहोव तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर
को दिया। 29 इसलिये इनकी रक्षा सावधानी से करो। तुम इसके

लिए तब तक उत्तरदायी हो जब तक तुम इसे यरूशलेम में मन्दिर
के प्रमुखो को नहीं दे देते। तुम इन्हें प्रमुख लेवीवंशियों को और
इस्राएल के परिवर प्रमुखों को दोगे। वे उन चीज़ों को तौलेंगे और
यरूशलेम में यहोवा के मन्दिर के कोठरियों में रखेंगे।"

30 सो उन याजकों और लेवियों ने चाँदी, सोने और उन विशेष
वस्तुओं को ग्रहण किया जिन्हें एज्रा ने तौला था और उन्हें यरूशलेम
में परमेश्वर के मन्दिर में ये वस्तुएं ले जाने के लिये कहा गया था।

31 पहले महीने के बारहवें दिन हम लोगों ने अहवा नदी को छोड़ा
और हम यरूशलेम की ओर चल पड़े। परमेश्वर हम लोगों के साथ
था और उसने हमरी रक्षा शत्रओं और डाकुओं से पूरे मार्ग भर की।
32 तब हम यरूशलेम आ पहुँचे। हमने वहाँ तीन दिन आराम किया।
33 चौथे दिन हम परमेश्वर के मन्दिर को गए और चाँदी, सोना और
विशेष चीज़ों को तौला। हमने याजक ऊरीयाह के पुत्र मरेमोत को
वे चीज़ें दीं। पीनहास का पुत्र एलीआजर मरेमोत के साथ था और
लेवीवंशी येशू का पुत्र योजाबाद और बिन्नूई का पुत्र नोअद्याह भी
उनके साथ थे। 34 हमने हर एक चीज़ गिनी और उन्हें तौला। तब
हमने उस समय कुल वज़न लिखा।

35 तब उन यहूदी लोगों ने जो बन्धुवाई से आये थे, इस्राएल के
परमेश्वर को होमबलि दी। उन्होंने बारह बैल पूरे इस्राएल के लिये
छियानव मेढ़े, सतहतर मेमने और बारह बकरे पाप भेंट के लिये
चढ़ाये। यह सब यहोवा के लिये होमबलि थी।

36 तब उन लोगों ने राजा अर्तक्षत्र का पत्र, राजकीय अधिपतियों
और फरात के पशिचम के क्षेत्र के प्रशासकों को दिया। तब उन्होंने
इस्राएल के लोगों और मन्दिर को अपना समर्थन दिया।

9

विदेशी लोगों से विवाह के विषय में एज्रा की प्रार्थना

1 जब हम लोग यह सब कर चुके तब इस्राएल के प्रमुख मेरे
पास आए। उन्होंने कहा, "एज्रा इस्राएल के लोगों और याजकों

तथा लेवीवंशियों ने अपने चारों ओर रहने वाले लोगों से अपने को
अलग नहीं रखा है। इस्राएल के लोग कनानियों, हित्तियों, परिज्जियों,
यबूसियों, अम्मोनियों, मोआबियों, मिस्र के लोगों और एमोरियों द्वारा
की जाने वाली बहुत सी बुरी बातों से प्रभावित हुए हैं 2 इस्राएल के
लोगों ने अपने चारों ओर रहने वाले अन्य जाति के लोगों से विवाह
किया है। इस्राएल के लोग विशेष माने जाते हैं। किन्तु अब वे अपने
चारों ओर रहने वाले अन्य लोगों से मिलकार दोगले हो गये हैं।
इस्राएल के लोगों के प्रमुखों और बड़े अधिकारियों ने इस विषय
में बुरे उदाहरण रखे हैं।" 3 जब मैंने इस विषय में सुना, मैंने अपना
लबादा और अंगरखा यह दिखाने के लिये फाड़ डाला कि मैं बहुत
परेशान हूँ। मैंने अपने सिर और दाढ़ी के बाल नोंच डाले। मैं दुःखी
और अस्त व्यस्त बैठ गया। 4 तब हर एक व्यक्ति जो इस्राएल के
परमेश्वर के नियमों का आदर करता था, भय से काँप उठा। वे डर
गए क्योंकि जो इस्राएल के लोग बन्धुवाई से लौटे, वे परमेश्वर के
भक्त नहीं थे। मुझे धक्का लगा और मैं घबरा गया। मैं वहाँ सन्ध्या
की बलि भेंट के समय तक बैठा रहा और वे लोग मेरे चारों ओर
इकट्ठे रहे।

5 तब, जब सन्ध्या की बलि भेंट का समय हुआ, मैं उठा। मैं बहुत
लज्जित था। मेरा लबादा और अंगरखा दोनों फटे थे और मैंने घुटनों
के बल बैठकर यहोव अपने परमेश्वर की और हाथ फैलाये। 6 तब
मैंने यह प्रार्थना की:

"हे मेरे परमेश्वर मैं इतना लज्जित और संकोच में हूँ कि तेरी
ओर मेरी आँखे नहीं उठतीं, हे मेरे परमेश्वर! मैं लाज्जित हूँ क्योंकि
हमारे पाप हमारे सिर से ऊपर चले गये हैं। हमारे अपराधों की ढेरी
इतनी ऊँची हो गई है कि वह आकाश तक पहुँच चुकी है। 7 हमारे
पूर्वजों के समय से अब तक हम लोगों ने बहुत अधिक पाप किये
हैं। हम लोगों ने पाप किये, इसलिये हम, हमारे राजा और हमारे
याजक दण्डित हुए। हम लोग विदेशी राजाओं द्वारा तलवार से और

बन्दीखाने में ठूंसे जाने तक दण्डित हुए हैं। वे राजा हमारा धन ले गए और हमें लज्जित किया। यह स्थिति आज भी वैसी ही है।

8 “किन्तु अन्त में अब तू हम पर कपालु हुआ है। तूने हम लोगों
में से कुछ को बन्धुवाई से निकल आने दिया है और इस पवित्र
स्थान में बसने दिया है। यहोवा, तूने हमें नया जीवन दिया है और
हमारी दासता से मुक्त किया है। 9 हाँ, हम दास थे, किन्तु तू हमें
सदैव के लिए दास नहीं रहने देना चाहता था। तू हम पर कृपालु
था। तूने फारस के राजाओं को हम पर कृपालु बनाया। तेरा मन्दिर
ध्वस्त हो गया था। किन्तु तूने हमें नया जीवन दिया जिससे हम तेरे
मन्दिर को फिर बना सकते हैं और नये की तरह पक्का कर सकते हैं।
परमेश्वर, तूने हमें यरूशलेम और यहूदा की रक्षा के लिये परकोटे
बनाने में सहायता की।

10 “हमारे परमेश्वर, अब हम तुझसे क्या कह सकते हैं? हम लोगों
ने तेरी आज्ञा का पालन करना फिर छोड़ दिया है। 11 हमारे परमेश्वर,
तूने अपने सेवकों अर्थात् नबियों का उपयोग कियाऔर उन आदेशों
को हमें दिया। तूने कहा था: ‘जिस देश में तुम रहने जा रहे हो और
जिसे अपना बनाने जा रहे हो, वह भ्रष्ट देश है। यह उन बहुत बुरे
कामों से भ्रष्ट हुआ है जिन्हें वहाँ रहने वालों ने किया है। उन लोगों
ने इस देश मे हर स्थान पर बहुत अधिक बुरे काम किये हैं। उन्होंने
इस देश को अपने पापों से गंदा कर दिया है। 12 अत: इस्राएल के
लोगों, अपने बच्चों को उनके बच्चों से विवाह मत करने दो। उनके
साथ सम्बन्ध न रखो! और उनकी वस्तुओ की लालसा न करो!
मेरे आदेशों का पालन करो जिससे तुम शक्तिशाली होगो और इस
देश की अच्छी चीज़ों का भोग करोरो। तब तुम इस देश को अपना
बनाये रखोगे और अपने बच्चों को दोगे।’

13 “जो बुरी घटनायें हमारे साथघटीं वे हमारी अपनी गलतियों
से घटीं। हम लोगों ने पाप के काम किये हैं और हम लोग बहुत

अपराधी हैं। किन्तु हमारे परमेश्वर, तूने हमें उससे बहुत कम दण्ड
दिया है जितना हमे मिलना चाहिये। हम लोगों ने बड़े भयानक काम
किये हैं और हम लोगों को इससे अधिक दण्ड मिलना चाहिये। ऐसा
होते हुए भी तूने हमारे लोगों में से कुछ को बन्धुवाई से मुक्त हो जाने
दिया है। 14 अत: हम जानते हैं कि हमें तेरे आदेशों को तोड़ना नहीं
चाहिये। हमें उन लोगों के साथ विवाह नहीं करना चाहिए। वे लोग
बहुत बुरे काम करते हैं। परमेश्वर यदि हम लोग उन बुरे लोगों के
साथ विवाह करते रहे तो हम जानते हैं कि तू हमें नष्ट कर देगा।
तब इस्राएल के लोगों में से कोई भी जीवित नहीं बच पाएगा।

15 "यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर, तू अच्छा है! और तू अब भी
हम में से कुछ को जीवित रहने देगा। हाँ, हम अपराधी हैं! और
अपने अपराध के कारण हम में किसी को भी तेरे सामने खड़े होने
नहीं दिया जाना चाहिये।"

10

लोग अपना पाप स्वीकार करते हैं

1 एज्रा प्रार्थना कर रहा था और पापों को स्वीकार कर रहा था।
वह परमेश्वर के मन्दिर के सामने रो रहा था और झुक कर प्रणाम
कर रहा था। जिस समय एज्रा यह कर रहा था उस समय इस्राएल
के लोगों का एक बड़ा समुह स्त्री, पुरूष और बच्चे उसके चारों ओर
इकट्ठे हो गए। वे लोग भी जोर—जोर से रो रहे थे। 2 तब यहीएल के
पुत्र शकन्याह ने जो एलाम के वंशजों में से था, एज्रा से बातें कीं।
शकन्याह ने कहा, "हम लोग अपने परमेश्वर के भक्त नहीं रहे। हम
लोगों ने अपने चारों ओर रहने वाले दूसरी जाति के लोगों के साथ
विवाह किया। किन्तु यद्यपि हम यह कर चुके हैं तो भी इस्राएल
के लिये आशा है। 3 अब हम अपने परमेश्वर के सामने उन सभी
स्त्रियों और उनके बच्चों को वापस भेजने की वाचा करें। हम लोग
यह एज्रा की सलाह मानने के लिये और उन लोगों की सलाह मानने
के लिये करेंगे जो परमेश्वर के नियमों का सम्मान करते हैं। हम

परमेश्वर के नियमों का पालन करेंगें। 4 एज्रा खड़े होओ, यह तुम्हारा
उत्तरदायित्व है, किन्तु हम तुम्हारा समर्थन करेंगे। अत: साहसी बनो
और इसे करो।"
5 अत: एज्रा उठ खड़ा हुआ। उसने प्रमुख याजक, लेवीवंशियों
और इस्राएल के सभी लोगों से जो कुछ उसने कहा, उसे करने की,
प्रतिज्ञा कराई। 6 तब एज्रा परमेश्वर के भवन के सामने से दूर हट
गया। एज्रा एल्याशीब के पुत्र योहानान के कमरे में गया। जब तक
एज्रा वहँा रहा उसने भोजन नहीं किया और न ही पानी पीया। उसने
यह किया क्योंकि वह तब भी बहुत दु:खी था। वह इस्राएल के उन
लोगों के लिये दु:खी था जो यरूशलेम को वापस आए थे। 7 तब
उसने एक सन्देश यहूदा और यरूशलेम में हर एक स्थान पर भेजा।
सन्देश में बन्धुवाई से वापस लौटे सभी यहूदी लोगों को यरूशलेम
में एक साथ इकट्ठा होने को कहा। 8 कोई भी व्यक्ति जो तीन दिन
के भीतर यरूशलेम नहीं आएगा, उसे अपनी सारी धन सम्पत्ति दे
देनी होगी। बड़े अधिकारियों और अग्रजों (प्रामुखों) ने यह निर्णय
लिया और वह व्यक्ति उस व्यक्ति समूह का सदस्य नहीं रह जायेगा
जिनके मध्य वह रहता होगा।
9 अत: तीन दिन के भीतर यहूदा और बिन्यामीन के परिवार
के सभी पुरूष यरूशलेम में इकट्ठे हुए और नवें महीने के बीसवें
दिन सभी लोग मन्दिर के आँगन में आ गये। वे सभी इस सभा के
विचारणीय विषय के कारण तथा भारी वर्षा से बहुत परेशान थे।
10 तब याजक एज्रा खड़ा हुआ और उसने उन लोगों से कहा, "तुम
लोग परमेश्वर के प्रति विश्वासी नहीं रहे। तुमने विदेशी स्त्रियों के
साथ विवाह किया है। तुमने वैसा करके इस्राएल को और अधिक
अपराधी बनाया है। 11 अब तुम लोगों के यहोवा को सामने स्वीकार
करना होगा कि तुमने पाप किया है। यहोवा तुम लोगों के पूर्वजों
का परमेश्वर है। तुम्हें यहोवा के आदेश का पालन करना चाहिए।
अपने चारों ओर रहने वाले लोगों तथा अपनी विदेशी पत्नियों से

अपने को अलग करो।”

12 तब पूरे समूह ने जो एक साथ इकट्ठा था, एज्रा को उत्तर दिया।
उन्होंने ऊँची आवाज़ में कहा: “एज्रा तुम बिल्कुल ठीक कहते हो!
हमें वह करना चाहिये जो तुम कहते हो। 13 किन्तु यहाँ बहुत से
लोग हैं और यह वर्षा का समय है सो हम लोग बाहर खड़े नहीं
रह सकते। यह समस्या एक या दो दिन में हल नहीं होगी क्योंकि
हम लोगों ने बुरी तरह पाप किये हैं। 14 पूरे समूह के सभा की
ओर से हमारे प्रमुखों को निर्णय करने दो। तब निश्चित समय पर
हमारे नगरों का हर एक व्यक्ति जिसने किसी विदेशी स्त्री से विवाह
किया है, यरूशलेम आए। उन्हें अपने अग्रजों (प्रमुखों) और नगरों
के न्यायाधीशों के साथ यहाँ आने दिया जाये। तब हमारा परमेश्वर
हम पर क्रोधित होना छोड़ देगा।”

15 केवल थोड़े से व्यक्ति इस योजना के विरूद्ध थे। ये व्यक्ति
थे असाहेल का पुत्र योनातान और तिकवा का पुत्र यहजयाह थे।
लेवीवंशी मशुल्लाम और शब्बतै भी इस योजना के विरूद्ध थे।

16 अत: इस्राएल के वे लोग, जो यरूशलेम में वापस आए थे,
उस योजना को स्वीकार करने को सहमत हो गए। याजक एज्रा ने
परिवार के प्रमुख पुरूषों को चुना। उसने हर एक परिवार समूह से
एक व्यक्ति को चुना। हर एक व्यक्ति नाम लेकर चुना गया। दसवें
महीने के प्रथम दिन जो लोग चुने गए थे हर एक मामले की जाँच
के लिये बैटे। 17 पहले महीने के पहले दिन तक उन्होंने उन सभी
व्यक्तियों पर विचार करना पूरा कर लिया जिन्होंने विदेशी स्त्रियों से
विवाह किया था।

विदेशी स्त्रियों से विवाह करने वालों की सूची

18 याजकों के वंशजों में ये नाम हैं जिन्होंने विदेशी स्त्रियों से विवाह
किया: योसादाक के पुत्र येशू के वंशजों, और येशू के भाईयों में से
ये व्यक्ति:

मासेयाह, एलीआज़र, यारीब और गदल्याह । 19 इन सभी ने
अपनी –अपनी पत्नियों से सम्बन्ध –विच्छेद करना स्वीकार
किया और तब हर एक ने अपने रेवड़ से एक –एक मेढ़ा
अपराध भेंट के रूप में चढ़ाया। उन्होंने ऐसे अपने –अपने
अपराधों के कारण किया।

20 हम्मेर के वंशजों में से ये व्यक्ति: हनानी और जबद्याह।

21 हारीम के वंशजों में से ये व्यक्ति थे: मासेयाह, एलियाह, शमायाह, यहीएल और उज्जियाह।

22 पशहूर के वंशजों में से ये व्यक्ति थे: एल्योएनै, मासेयाह, इशमाएल, नतनेल, योजाबाद और एलासा।

23 लेवीवंशियों में से इन व्यक्तियों ने विदेशी स्त्रियों से विवाह किया:

योजाबाद, शिमी, केलायाह (इसे कलीता भी कहा जाता है) पतह्याह, यहूदा और एलीआज़र।

24 गायकों में केवल यह व्यक्ति है, जिसने विदेशी स्त्री से विवाह किया: एल्याशीब।

द्वारपालों में से ये लोग हैं जिन्होंने विदेशी स्त्रियों से विवाह किया: शल्लूम, तेलेम और ऊरी।

25 इस्राएल के लोगों में से ये लोग हैं जिन्होंने विदेशी स्त्रियों से विवाह किया:

परोश के वंशजों से ये व्यक्ति: रम्याह, यिज्जियाह, मलिकयाह, मियामीन, एलीआज़र, मल्कियाह और बनायाह।

26 एलाम के वंशजो में से ये व्यक्ति: मत्तन्याह, जकर्याह, यहीएल, अब्दी, यरेमोत और एलियाह।

27 जत्तू के वंशजों में से ये व्यक्ति: एल्योएनै, एल्याशीब, मत्तन्याह, यरेमोत जाबाद और अजीज़ा।

28 बेबै के वंशजों में से ये व्यक्ति: यहोहानान, हनन्याह जब्बै, और अतलै।

29 बानी के वंशजों में से ये व्यक्ति: मुशल्लाम, मल्लूक, अदायाह,

याशूब, शाल और यरामोत।
30 पहतमोआब के वंशजों में से ये व्यक्ति: अदना, कलाल,
बनायाह, मासेयाह, मत्तन्याह, बसलेल, बिन्नूई और मनश्शे।
31 हारीम के वंशजों में से ये व्यक्ति: एलिआज़र, यिश्शियाह,
मल्कियाह, शमायाह, शिमोन, 32 बिन्यामीन, मल्लूक और
शमर्याह।
33 हाशूम के वंशजों में से ये व्यक्ति: मत्तनै, मत्तत्ता, जाबाद,
एलीपेलेत, यरेमै, मनश्शे और शिमी।
34 बानी के वंशजों में से ये व्यक्ति: मादै, अम्राम, ऊएल;
35 बनायाह, बेदयाह, कलूही; 36 बन्याह, मरेमोत एल्याशीब:
37 मत्तन्याह, मतनै, यासू;
38 बिन्नूई के वंशजों में से ये व्यक्ति: शिमी, 39 शेलेम्याह, नातान,
अदायाह; 40 मक्नदबै, शाशै, शारै; 41 अजरेल, शेलेम्याह,
शेमर्याह; 42 शल्लूम, अमर्याह, और योसेफ।
43 नबो के वंशजों में से ये व्यक्ति: यीएल, मत्तित्याह, जाबाद,
जबीना, यद्दो, योएल, और बनायाह।

44 इन सभी लोगों ने विदेशी स्त्रियों से विवाह किया था और इनमें
से कुछ के इन पत्नियों से बच्चे भी थे।

पवित्र बाइबल
The Holy Bible, Easy Reading Version, in Hindi

copyright © 1992-2010 World Bible Translation Center

Language: हिंदी (Hindi)

Translation by: World Bible Translation Center

License Agreement for Bible Texts World Bible Translation Center Last Updated: September 21, 2006 Copyright © 2006 by World Bible Translation Center All rights reserved. These Scriptures: • Are copyrighted by World Bible Translation Center. • Are not public domain. • May not be altered or modified in any form. • May not be sold or offered for sale in any form. • May not be used for commercial purposes (including, but not limited to, use in advertising or Web banners used for the purpose of selling online add space). • May be distributed without modification in electronic form for non-commercial use. However, they may not be hosted on any kind of server (including a Web or ftp server) without written permission. A copy of this license (without modification) must also be included. • May be quoted for any purpose, up to 1,000 verses, without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. A copyright notice must appear on the title or copyright page using this pattern: "Taken from the HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSIONTM © 2006 by World Bible Translation Center, Inc. and used by permission." If the text quoted is from one of WBTC's non-English versions, the printed title of the actual text quoted will be substituted for "HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSIONTM." The copyright notice must appear in English or be translated into another language. When quotations from WBTC's text are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials of the version (such as "ERV" for the Easy-to-Read VersionTM in English) must appear at the end of each quotation. Any use of these Scriptures other than those listed above is prohibited. For additional rights and permission for usage, such as the use of WBTC's text on a Web site, or for clarification of any of the above, please contact World Bible Translation Center in writing or by email at distribution@wbtc.com. World Bible Translation Center P.O. Box 820648 Fort Worth, Texas 76182, USA Telephone: 1-817-595-1664 Toll-Free in US: 1-888-54-BIBLE E-mail: info@wbtc.com WBTC's web site – World Bible Translation Center's web site: http://www.wbtc.org

2019-11-15

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 8 Sep 2021 from source files dated 18 Aug 2021

7f0fcd5b-bc85-55f6-933a-0de82e7ef275